अकेले बच्चों की समस्या उतनी विकट नहीं है

परिवार के बदलते ढांचे और परिवार की साइज़ की बदलती समझ के साथ एकल बच्चे एक आम बात बनते जा रहे हैं। खास तौर से मध्यम वर्गीय परिवारों में एक ही बच्चा होना सामान्य बात हो चली है। क्या ऐसे बच्चों के मानसिक व सामाजिक विकास में कोई बाधा आती है? इस सवाल का सहज बुद्धि जवाब जो भी हो मगर यू.एस. में हुए दो अध्ययनों ने परस्पर विपरीत परिणाम प्रस्तुत किए हैं। रोचक बात है कि दोनों अध्ययन एक ही टीम ने किए हैं।

पहला अध्ययन 2004 में हुआ था। इसमें किंडरगार्टन के20,000 से ज़्यादा बच्चों के शिक्षकों से यह आकलन करने को कहा गया था कि ये बच्चे सामाजिक हुनर के लिहाज़ से कहां बैठते हैं। इस अध्ययन के नतीजों से पता चला था कि शिक्षकों का आकलन था कि एकल बच्चे सामाजिक हुनर के लिहाज़ से अपने उन सहपाठियों से कमज़ोर थे जिनके कम से कम एक भाई या बहन थे। शिक्षकों ने बताया था कि एकल बच्चों में आत्म-नियंत्रण की कमी, मेल-मिलाप के हुनर का अभाव व व्यवहारगत समस्याएं देखी जाती हैं।

इस बात को किशोरावस्था के स्तर पर समझने के लिए ओहायो स्टेट विश्वविद्यालय के डोना बॉबिट-ज़ेहर और डगलस डाउनी ने एक और अध्ययन किया। उन्होंने यू.एस. के मिडिल व हाई स्कूल में पढ़ने वाले 13,466 छात्रों (लड़के-लड़कियां दोनों) को अपने-अपने स्कूल से पांच सबसे अच्छे दोस्त चुनने को कहा।

इन आंकड़ों के परिणाम बताते हैं कि एकल बच्चे व भाई-बहन वाले बच्चे, दोनों के दोस्त चुने जाने की संभावना बराबर थी। अर्थात बच्चों ने जो दोस्त चुने थे, उनमें एकल बच्चों व अन्य बच्चों की संख्या बराबर थी। मतलब दोनों तरह के बच्चे बराबर लोकप्रिय थे।

शोधकर्ताओं का कहना है कि हालांकि ये दो अध्ययन विपरीत निष्कर्ष देते हैं मगर इन्हें समझने की ज़रूरत है। पहला अध्ययन छोटे बच्चों पर किया गया था और दूसरा किशोर बच्चों पर। इनसे पता चलता है कि सामाजिक हुनर हासिल करने में जो भी शुरुआती दिक्कत आती होगी, उम्र के साथ उसकी भरपाई हो जाती है।

पूर्व में किए गए कुछ अन्य अध्ययनों से यह पता चला था कि एकल बच्चों में संज्ञान क्षमता का विकास ज़्यादा होता है। ऐसे में एकल बच्चों को कोई नुकसान होता हो, ऐसा लगता नहीं।

अलबत्ता इन अध्ययनों ने एक बात ज़रूर रेखांकित की है - क्या इस तरह किए गए अध्ययनों से कोई निश्चयात्मक निष्कर्ष निकाला जा सकता है? या दूसरे शब्दों में कहें, तो सवाल यह है कि ऐसे मुद्दे का अध्ययन कैसे किया जाए। समाज विज्ञान में शोध करने वाले इस विषय पर विचार कर रहे हैं और यह अध्ययन इस विमर्श को एक ठोस धरातल देकर पैना बनाएगा। ***(स्रोत फीचर्स)***